# ग्राम श्री

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

## अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

### » कवि-परिचय और 'ग्राम श्री' की पृष्ठभूमि

**प्रश्न 1 (आसान). सुमित्रानंदन पंत का जन्म किस गाँव में हुआ था?**
उत्तर – कौसानी (उत्तराखंड) गाँव में।

**प्रश्न 2 (आसान). सुमित्रानंदन पंत का जन्म सन कितने में हुआ?**
उत्तर – सन 1900 में।

**प्रश्न 3 (आसान). पंत जी ने किस आह्वान पर कॉलेज छोड़ा?**
उत्तर – महात्मा गांधी के आह्वान पर।

**प्रश्न 4 (मध्यम). 'ग्राम श्री' में 'प्राकृतिक सुषमा' से क्या समझते हैं?**
उत्तर – गाँव की प्रकृति का सौंदर्य–हरियाली, खेत-खलिहान, हवा-रोशनी आदि।

**प्रश्न 5 (कठिन). क्यों कहा जा सकता है कि पंत जी की पृष्ठभूमि 'ग्राम श्री' के भावों से जुड़ती है?**
उत्तर – क्योंकि पंत जी की संवेदना गाँव/प्रकृति के करीब रही, और आज़ादी आंदोलन में जुड़कर बदलाव की समझ भी बनी–इसी कारण कविता में गाँव की सुषमा और समृद्धि को भावपूर्ण तरीके से देखा गया है।

### » छायावाद/प्रगतिवाद/अरविंद-दर्शन से प्रभावित दृष्टि

**प्रश्न 6 (आसान). छायावाद का मुख्य आकर्षण किसमें होता है?**
उत्तर – प्रकृति-सौंदर्य और भावों की गहराई में।

**प्रश्न 7 (आसान). प्रगतिवाद कविता में किन बातों को महत्व देता है?**
उत्तर – सामाजिक यथार्थ, संघर्ष और इंसान की गरिमा को।

**प्रश्न 8 (मध्यम). यदि किसी पद में किसान की मेहनत के साथ अन्याय/दबाव का भाव आता है, तो किस दृष्टि का प्रभाव अधिक समझोगे?**
उत्तर – प्रगतिवाद का।

**प्रश्न 9 (मध्यम). यदि किसी पंक्ति में 'अंदर से जगने/विकसित होने' जैसी चेतना का अनुभव हो, तो वह किस दर्शन से अधिक मेल खाती है?**
उत्तर – अरविंद-दर्शन से।

**प्रश्न 10 (कठिन). "ग्राम श्री" में गाँव की प्राकृतिक सुषमा भी है और गाँव के जीवन की संवेदना भी। इस मिश्रण को कैसे समझोगे?**
उत्तर – प्राकृतिक सुषमा छायावाद से और गाँव के जीवन की संवेदना/सरोकार प्रगतिवाद से जुड़ता है; अरविंद-दर्शन की गहरी अनुभूति भी भाव-स्तर पर साथ आ सकती है।

### » प्रकृति और मनुष्य का अंतरंग संबंध

**प्रश्न 11 (आसान). 'प्रकृति और मनुष्य का अंतरंग संबंध' का मतलब क्या सिर्फ 'प्रकृति का दृश्य वर्णन' तक सीमित है?**
उत्तर – नहीं। प्रकृति को कवि मन के भावों/अनुभूति से जोड़ता है।

**प्रश्न 12 (आसान). कविता में 'रोमांचित' जैसे भावों वाले शब्द प्रकृति के बारे में क्या बताते हैं?**
उत्तर – कि प्रकृति मनुष्य के भीतर असर करती है, सिर्फ बाहर दिखाई नहीं देती।

**प्रश्न 13 (मध्यम). कविता में 'रंग', 'गंध', और 'ध्वनि' का इस्तेमाल क्यों किया गया होगा–ताकि क्या प्रभाव बने?**
उत्तर – ताकि पाठक प्रकृति को सिर्फ देखे नहीं, उसे महसूस करे और मन के भाव जुड़ें–रोमांच/सुकून आदि।

**प्रश्न 14 (कठिन). 'ग्राम श्री' में खेत, फसल, नदी-रेती और जीव-जगत को गाँव के जीवन का हिस्सा कहा गया है–इसे 'मनुष्य' के संदर्भ में समझाइए।**
उत्तर – क्योंकि ये सब मिलकर गाँव की रोज़मर्रा की अनुभूतियाँ, काम, आनंद, प्रकृति-जनित भाव और जीवन-लय बनाते हैं। मनुष्य का जीवन इन्हीं से चलता है और उसकी अनुभूति भी इन्हीं से गहरी होती है।

## » कवि का शब्द-चयन और 'शब्द शिल्पी' की अवधारणा

**प्रश्न 15 (आसान). 'शब्द शिल्पी' से आशय क्या है?**
उत्तर – वह कवि जो भावों की अभिव्यक्ति के लिए शब्दों का सटीक चयन करके भावों का 'शिल्प' रचता है।

**प्रश्न 16 (आसान). भावों की अभिव्यक्ति के लिए कवि को क्या चाहिए?**
उत्तर – भावों की अभिव्यक्ति के लिए सटीक शब्द चाहिए।

**प्रश्न 17 (मध्यम). अगर कवि 'फसल' के बजाय 'दूर तक लहलहाती फसलें' लिखे तो भाव पर क्या फर्क पड़ता है?**
उत्तर – 'दूर तक' और 'लहलहाती' शब्द विस्तार और लहर जैसी हरकत का अनुभव कराते हैं, जिससे केवल सूचना नहीं बल्कि चित्र/रोमांच बनता है।

**प्रश्न 18 (कठिन). मान लो आप 'सुंदर रेती' को हटाकर सिर्फ 'रेती' लिख दें। शब्द-चयन हटने से भाव पर क्या असर होगा?**
उत्तर – 'सुंदर' शब्द सौंदर्यबोध/चमक का अनुभव देता है। इसे हटाने पर भाव फीका पड़ जाता है–रेती का सामान्य वर्णन रह जाता है, रोमांच/चित्र उतना प्रभावी नहीं बनता।

## » मनोहर प्रकृति-चित्रण: खेत, हरियाली, रंग और गंध

**प्रश्न 19 (आसान). कौन-सा भाग 'दृश्य-बोध' कहलाएगा–रंग/आकृति या गंध/महक?**
उत्तर – रंग/आकृति (दृश्य-बोध)।

**प्रश्न 20 (आसान). "तैलाक्त गंध्" किस इंद्रिय-बोध से जुड़ा है?**
उत्तर – गंध से–इंद्रिय-बोध।

**प्रश्न 21 (मध्यम). "चाँदी की सी उजली जाली" में कवि क्या बना रहा है–तस्वीर या खुशबू?**
उत्तर – तस्वीर/चमकदार दृश्य (दृश्य-बोध)।

**प्रश्न 22 (कठिन). अगर कविता में सिर्फ रंग आते हों पर गंध न हो, तो सौंदर्य-आभास पर क्या असर पड़ेगा–(एक कारण लिखो)?**
उत्तर – सिर्फ दृश्य अच्छा लगेगा, पर 'महसूस' कम होगा; गंध नहीं होने से इंद्रिय-बोध वाला असर घट जाएगा।

## » उपमा/कल्पना से गाँव का 'भाव' समझना (हरता जन मन, मरकत डिब्बा)

**प्रश्न 23 (आसान). 'मरकत डिब्बे सा खुला ग्राम' में 'मरकत' किस भाव का संकेत देता है?**
उत्तर – हरे रत्न जैसा चमकदार, गहरा हरियाली का आकर्षण।

**प्रश्न 24 (आसान). 'हरता जन मन' का अर्थ सिर्फ 'हरा दिखता है' है या मन पर असर भी?**
उत्तर – मन पर असर भी–मन में सुख/तरावट आना।

**प्रश्न 25 (मध्यम). उपमा (तुलना) का काम कविता में क्या होता है? इस कविता में यह कैसे मदद कर रही है?**
उत्तर – तुलना से चित्र और भाव दोनों स्पष्ट होते हैं; यहाँ 'मरकत डिब्बे' से गाँव की चमकदार हरियाली की कल्पना और 'हरता जन मन' से मन के आनंद का भाव स्पष्ट होता है।

**प्रश्न 26 (कठिन). कविता में 'निज शोभा से हरता जन मन'–इस पंक्ति के आधार पर एक तर्क लिखिए: 'गाँव की सुंदरता मनोभावों को कैसे जोड़ती है'?**
उत्तर – 'निज शोभा से' बताता है कि गाँव की अपनी प्राकृतिक सुंदरता ही कारण है। उसी सुंदरता (हरियाली, शांति, उजास) का प्रभाव सीधे मन पर पड़ता है, इसलिए मन/जन मन 'हरता' यानी तरोताज़ा-प्रसन्न महसूस करता है। कवि रूपक के जरिए दृश्य को भाव में बदल देता है।

### » फसल-वर्णन से मौसम/दृश्य-समय की पहचान

**प्रश्न 27 (आसान). अगर कविता में गेहूँ की बाली का उल्लेख हो, तो यह किस तरह का संकेत देती है?**
उत्तर – फसल के पकाव/तैयारी के समय की दिशा का संकेत।

**प्रश्न 28 (आसान). सिर्फ एक संकेत देखकर मौसम तय करना सही है या गलत?**
उत्तर – गलत–कई संकेतों को साथ जोड़ना चाहिए।

**प्रश्न 29 (मध्यम). अरहर और सनई खेत में दिखें तो उससे मौसम के बारे में क्या समझते हैं?**
उत्तर – यह खेत की स्थिति/वृद्धि की अवस्था बताता है, जिससे मौसम/दृश्य-समय का अनुमान लगाया जाता है।

**प्रश्न 30 (कठिन). कविता में हरियाली ताज़ा है, गेहूँ की बाली है और अरहर/सनई भी दिखती है। इन संकेतों के आधार पर एक संभावित मौसम-समय लिखिए और कारण भी।**
उत्तर – संभावित समय ठंड के अंत के बाद/पकाव वाला चरण। कारण: गेहूँ की बाली पकाव दिखाती है, हरियाली ताज़ा है, और अरहर/सनई की मौजूदगी खेत की सक्रिय/तैयारी अवस्था दर्शाती है।

### » विशिष्ट खेत-तत्वों का चित्र: अरहर और सनई

**प्रश्न 31 (आसान). कवि अरहर और सनई को किस रूप में उपमा देता है?**
उत्तर – "सोने की ककिणियाँ" की तरह

**प्रश्न 32 (आसान). कविता में किस खेत-तत्व का पीला रंग खास रूप से आता है?**
उत्तर – सरसों

**प्रश्न 33 (मध्यम). "हरित धरा से झाँक रही" का भाव किस प्रकार का है?**
उत्तर – हरी धरती के बीच से फूल/शोभा का उभरकर बाहर दिखना

**प्रश्न 34 (कठिन). अरहर-सनई वाली उपमा को समझने के लिए कवि ने सिर्फ रंग नहीं, कौन-कौन से इंद्रिय-संकेत भी जोड़े हैं?**
उत्तर – भीनी तैलाक्त गंध (खुशबू) और पास में सरसों का पीला दृश्य; साथ ही हरी धरती में से झाँकने की छवि

### » पंक्ति-आधारित भाव स्पष्ट करना (गंगा की सतरंगी रेती)

**प्रश्न 35 (आसान). 'सुंदर लगती सरपत छाई' में कवि ने किस चीज़ का वर्णन किया है, और भाव क्या है?**
उत्तर – सरपत/हरियाली की फैलाव वाली छाया का वर्णन है; भाव प्रशंसा और आनंद है।

**प्रश्न 36 (आसान). 'तिरते जल में सुरखाब' से हमें कौन-सा दृश्य समझ आता है?**
उत्तर – पानी में शांति से तैरते पक्षियों का सुंदर दृश्य।

**प्रश्न 37 (मध्यम). 'कलँगी सँवारते हैं कोई' पंक्ति में 'सँवारते' शब्द से कवि क्या दिखाना चाहता है? भाव स्पष्ट कीजिए।**
उत्तर – 'सँवारते' से पता चलता है कि काम/गतिविधि में सलीका और सौंदर्य है–कवि गाँव के जीवन को सुंदर, सुसंस्कृत और सक्रिय मानता है; भाव आकर्षण/प्रशंसा का है।

**प्रश्न 38 (मध्यम). 'पुलिन पर मगरौठी रहती सोई' पंक्ति में स्थिरता कहाँ है और कवि का भाव कैसे बनता है?**

उत्तर – 'रहती सोई' से मगरौठी की शांत-सी स्थिति दिखती है; इससे वातावरण में सुकून/शांति आती है और कवि का भाव भी शांत-आनंद वाला हो जाता है।

**प्रश्न 39 (कठिन). पूरी रचना की भावना के हिसाब से 'गंगा की सतरंगी रेती' से लेकर 'हरता जन मन' तक, कवि की अनुभूति एक साथ लिखिए।**

उत्तर – कवि गंगा के तट को बहुरंगी, प्रकृति-सजीव और जीवन-भरा सुंदर मानता है। कहीं हरियाली की 'सुंदर' छटा है, कहीं कामकाजी गतिविधि और बगुलों/पक्षियों की मनमोहक मौजूदगी है। कहीं हलचल है और कहीं शांत विश्राम। इस सबकी वजह से कवि का भाव प्रशंसा, आनंद और सम्मोहक/मन को खींच लेने वाला अनुभव है–'निज शोभा से हरता जन मन'।

## हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

**उदाहरण 1. 'ग्राम श्री' की पृष्ठभूमि समझने के लिए बताओ: इसमें वर्णित 'प्राकृतिक सुषमा' और 'समृद्धि'–दोनों का मतलब अलग-अलग कैसे होगा?**

› प्राकृतिक सुषमा को प्रकृति के सौंदर्य की तरह समझो–हरियाली, हवा, रोशनी, खेत-खलिहान।

› समृद्धि को गाँव की खुशहाली/उन्नति की तरह समझो–मेहनत का फल, अच्छे हालात, संतोष।

› फिर लिखो कि कविता में दोनों साथ मिलकर गाँव की 'श्री' का चित्र बनाते हैं।

**उत्तर – प्राकृतिक सुषमा = प्रकृति का सौंदर्य (हरियाली, हवा, खेत-खलिहान की चमक)। समृद्धि = गाँव की खुशहाली/उन्नति (फसल/जीवन की अच्छे हालात, संतोष)। दोनों मिलकर गाँव की 'श्री' का समग्र चित्र बनाते हैं।**

**उदाहरण 2. पंत जी की कविता में "ग्राम" का चित्रण देखकर तय करना है कि उसमें कौन-सी प्रभावित दृष्टि ज्यादा दिख रही है: (क) सिर्फ प्राकृतिक सौंदर्य और भाव, (ख) किसान-जीवन की समस्याएँ व संघर्ष, (ग) जीवन-ऊर्जा/आत्म-उन्नयन जैसी गहरी अनुभूति। उदाहरणात्मक वाक्य चुनो और मिलान करो।**

› वाक्य (क) में अगर प्रकृति-सौंदर्य और भावों की संगीतात्मकता है, तो उसे छायावाद से जोड़ो।

› वाक्य (ख) में अगर शोषण/मेहनत/संघर्ष या सामाजिक गरिमा का संकेत है, तो उसे प्रगतिवाद से जोड़ो।

› वाक्य (ग) में अगर आत्म-चेतना, आध्यात्मिक गहराई, भीतर के विकास का भाव है, तो उसे अरविंद-दर्शन से जोड़ो।

› अंत में लिखो–पंत जी की दृष्टि में ये तीनों परतें साथ चल सकती हैं, इसलिए एक कवितांश में एक से अधिक दृष्टि मिल सकती है।

**उत्तर – (क) छायावाद; (ख) प्रगतिवाद; (ग) अरविंद-दर्शन। पंत जी के यहाँ कई जगह एक साथ मिश्रित प्रभाव भी दिखता है।**

**उदाहरण 3. कविता की पंक्ति "रोमांचित सी लगती वसुध" से 'प्रकृति और मनुष्य के अंतरंग संबंध' कैसे समझ में आता है? समझाइए।**

› पंक्ति में 'वसुध' यानी धरती/प्रकृति को 'रोमांचित' कहा गया है–ये भाव का शब्द है, सिर्फ दृश्य का नहीं।

› रोमांच मनुष्य का अनुभव है; जब प्रकृति को उसी अनुभव की तरह दिखाया जाता है, तो प्रकृति मनुष्य के भीतर के भाव से जुड़ती है।

› इससे पता चलता है कि कवि प्रकृति को बाहर अलग नहीं रखता–वह मनुष्य के हृदय में उसी तरह असर करती है जैसे एक जीवित शक्ति।

**उत्तर – क्योंकि "रोमांचित" भाव का शब्द है, इसलिए कवि प्रकृति (धरती) को मनुष्य की अनुभूति के साथ जोड़ देता है। इससे स्पष्ट होता है कि प्रकृति केवल दृश्य नहीं, मन के भीतर असर करके संबंध बनाती है–यही 'प्रकृति और मनुष्य का अंतरंग संबंध' है।**

**उदाहरण 4. 'ग्राम श्री' में पंत जी जब गाँव की प्राकृतिक सुषमा/समृद्धि को लिखते हैं, तो वे भावों को सटीक शब्दों से कैसे उभारते हैं? दिए गए संकेतों के आधार पर बताइए कि कौन-सा शब्द-चयन भाव बनाता है–और क्यों।**

› भाव पहले तय होते हैं: रोमांच, सुषमा, समृद्धि जैसी अनुभूति कवि के मन में होती है।
› अब कवि ऐसे शब्द चुनता है जो ठीक वही एहसास जगाएं–सिर्फ 'वर्णन' न करें, 'अनुभूति' बनाएं।
› फसल के लिए 'दूर तक' जैसे शब्द विस्तार और लहर जैसी अनुभूति जोड़ते हैं।
› पेड़ों की डालियों के लिए 'लदी' शब्द भार/रस/समृद्धि की भावना देता है।
› गंगा की रेती के लिए 'सुंदर' शब्द चमक और सौंदर्यबोध जगाता है।
› इन सटीक शब्दों की वजह से कविता में रोमांच शब्दों के जरिए सीधे पाठक के मन तक पहुँचता है–इसी को शब्द-शिल्पी का कौशल माना जाता है।

**उत्तर – पंत जी भावों को सिर्फ बताकर नहीं, शब्दों से गढ़कर उभारते हैं। 'दूर तक' फसल का विस्तार-लहर बनाता है, 'लदी' समृद्धि और रस का भार पैदा करता है, और 'सुंदर' गंगा की रेती का सौंदर्यबोध जगाता है। इसलिए कहा जाता है कि भावों के लिए सटीक शब्द-चयन ही कवि को 'शब्द शिल्पी' बनाता है और 'ग्राम श्री' का रोमांच शब्दों के जरिए पाठक तक पहुँचता है।**

**उदाहरण 5. कविता की इन पंक्तियों में बताओ–कहाँ 'दृश्य-बोध' है और कहाँ 'इंद्रिय-बोध' (गंध) ?**

**(1) "मखमल की कोमल हरियाली"**
**(2) "चाँदी की सी उजली जाली"**
**(3) "उड़ती भीनी तैलाक्त गंध्"**

› पंक्ति (1) में 'हरियाली' की कोमलता और 'मखमल' जैसा रूपक है–यह देखने वाली अनुभूति है।
› पंक्ति (2) में 'चाँदी की उजली जाली' से किरणों की चमक/आकृति बताई गई है–यह भी दृश्य-बोध है।
› पंक्ति (3) में 'गंध' शब्द है और 'भीनी तैलाक्त' बताया–यह नाक से महसूस होने वाली अनुभूति है, यानी इंद्रिय-बोध।
› अब निष्कर्ष: (1) और (2) = दृश्य-बोध; (3) = इंद्रिय-बोध (गंध)।

**उत्तर – (1) और (2) में दृश्य-बोध है (रंग/आकृति, किरणों का रूप)। (3) में इंद्रिय-बोध है (गंध–'तैलाक्त गंध्')।**

**उदाहरण 6. प्रश्न-अभ्यास: 'कवि ने गाँव को 'हरता जन मन' क्यों कहा है?' भाव स्पष्ट कीजिए।**

› शब्द 'हरता' का सीधा अर्थ 'हरा करना' नहीं, बल्कि 'मन को तरोताज़ा/प्रसन्न करना' समझो।
› कविता में आगे संकेत मिलता है कि यह असर गाँव की अपनी शोभा से हो रहा है।
› अब कारण लिखो: गाँव की हरियाली, शांति और सौंदर्य लोगों के मन में आनंद भरता है।
› आखिर में भाव-निष्कर्ष लिखो: इसलिए 'हरता जन मन'–मन का खिल उठना।

**उत्तर – कवि ने गाँव को 'हरता जन मन' कहा है क्योंकि गाँव की प्राकृतिक शोभा (हरी, सुंदर और शांत प्रकृति) लोगों के मन को भी तरोताज़ा और प्रसन्न कर देती है। 'हरता' यहाँ मन पर पड़ने वाले आनंद/उत्साह के भाव को दर्शाता है, सिर्फ रंग को नहीं।**

**उदाहरण 7. कविता में गेहूँ की बाली के साथ खेत में अरहर और सनई भी दिखती हैं। हरियाली ताज़ा है। इस आधार पर बताइए कि यह सौंदर्य-वर्णन किस मौसम/दृश्य-समय की तरफ संकेत करता है और क्यों।**

› पहले फसल का चरण पहचानो: गेहूँ की बाली 'पकाव' की ओर संकेत करती है।
› फिर हरियाली की स्थिति देखो: ताज़ा/घनी हरियाली बताती है कि यह सिर्फ बहुत शुरुआती ठंड नहीं है।
› अब खेत में अरहर और सनई की मौजूदगी को जोड़ो: यह खेत की सक्रिय वृद्धि/तैयारी वाली अवस्था दिखाती है।
› इन तीनों संकेतों को साथ मिलाकर 'ठंड का अंत + पकाव/बाद वाला समय' जैसी तस्वीर बनाओ।
› निष्कर्ष लिखो–मौसम/दृश्य-समय बताओ और कारण 1-2 पंक्तियों में जोड़ो।

**उत्तर – यह सौंदर्य-वर्णन ऐसे मौसम/दृश्य-समय की ओर संकेत करता है जब गेहूँ की बाली भर रही हो और खेत की हरियाली ताज़ा हो–यानी ठंड के अंत के बाद/पकाव वाला समय। कारण: 'गेहूँ की बाली' पकाव का संकेत देती है और साथ में अरहर व सनई व ताज़ा हरियाली यह दिखाती है कि खेत सक्रिय व तैयार अवस्था में है।**

**उदाहरण 8. कविता की पंक्तियों के आधार पर बताइए–अरहर और सनई को कवि ने 'सोने की ककिणियाँ' कहकर किस तरह देखा है? और इस उपमा के साथ कौन-कौन से दृश्य-संकेत मिलते हैं?**

› उपमा पहचानो: "अरहर सनई की सोने की ककिणियाँ हैं शोभाशाली"

› बताओ उपमा किस चीज़ को पकड़ रही है: अरहर-सनई की चमक/शोभा को सोने जैसी किण-किणाहट जैसी कल्पना

› दृश्य संकेत साथ जोड़ो: "पुफली सरसों पीली पीली" (पीला रंग), "हरित धरा से झाँक रही" (हरी धरती में उभरना)

› पर्यावरण/अनुभव संकेत जोड़ो: "उड़ती भीनी तैलाक्त गंध्" (खुशबू)

› निष्कर्ष बनाओ: उपमा + दृश्य-विवरण मिलकर खेत का पूरा अर्थ/चित्र बनाते हैं

**उत्तर – कवि अरहर और सनई को सोने की चमक/शोभा के रूप में देखता है, इसलिए उन्हें 'सोने की ककिणियाँ' कहता है। साथ में वह पीली सरसों का दृश्य ("पुफली सरसों पीली पीली"), हरी धरती में से उभरती झलक ("हरित धरा से झाँक रही") और खुशबू का अनुभव ("उड़ती भीनी तैलाक्त गंध्") जोड़ता है। इसी मेल से खेत का चित्र और अर्थ स्पष्ट होता है।**

**उदाहरण 9. 'बालू वेफ साँपों से अंकित गंगा की सतरंगी रेती' पंक्ति के आधार पर भाव स्पष्ट कीजिए।**

› पंक्ति का अर्थ पकड़ो: गंगा की रेत पर लहरों/रेखाओं जैसी बनावट है और वह इंद्रधनुष जैसी बहुरंगी लगती है।

› सौंदर्य-आधार बताओ: 'साँपों से अंकित' से रेत पर घुमावदार/लहरदार रेखाएँ दिखती हैं; 'सतरंगी' से चमक और कई रंगों का आभास आता है।

› कवि की अनुभूति लिखो: यह दृश्य कवि को मनमोहक लगता है, इसलिए वह रेत को 'सतरंगी' और सुंदर रूप में प्रस्तुत करता है।

**उत्तर – कवि कहना चाहता है कि गंगा किनारे की रेत सिर्फ साधारण नहीं है–उस पर लहरदार/घुमावदार रेखाएँ ऐसी दिखाई देती हैं जैसे 'साँपों से अंकित' हों। साथ ही वह रेत 'सतरंगी' लगती है, यानी उसमें बहुरंगी चमक का आभास है। इसीलिए कवि के मन में उसके सौंदर्य को देखकर प्रशंसा और आनंद का भाव है–वह दृश्य को बहुत सुंदर और मन को खींच लेने वाला मानता है।**

## बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

- कवि-परिचय में जन्म-स्थान, शिक्षा, आंदोलन और काव्य-काल के 4 पॉइंट याद रखना।
- प्रश्न आए तो एक पंक्ति में 'छायावाद/प्रगतिवाद/अरविंद-दर्शन' और उनके संकेत लिखो।
- प्रश्न आए तो लिखो: प्रकृति मन के भावों से जुड़ती है–"भाव" वाले शब्दों पर उदाहरण दो।
- उत्तर लिखते समय 'सटीक शब्द' और 'भाव/चित्र' का संबंध जरूर लिखो।
- प्रश्न आए तो हमेशा लिखना: रंग/किरणें = दृश्य-बोध, गंध = इंद्रिय-बोध।
- MCQ/उत्तरात्मक में 'क्यों' वाले प्रश्न में कारण-भाव (मन पर असर) लिखो।
- उत्तर में 'कविता का संकेत' और 'क्यों' दोनों लिखो।
- उत्तर में उपमा (ककिणियाँ) और साथ के दृश्य-संकेत (गंध/सरसों/हरी धरती) जरूर लिखो।
- 'भाव' लिखते समय हमेशा कवि की अनुभूति (प्रशंसा/आनंद/शांति) एक लाइन में जरूर जोड़ो।

## एक नज़र में रिवीज़न

› - पंत: कौसानी (1900), गांधी आह्वान पर कॉलेज छोड़ा, छायावाद स्तंभ।

› छा-प्र-आ: छायावाद-प्रगतिवाद-अरविंद = पंत की दृष्टि

› - प्रकृति: दृश्य नहीं, भावों की तरह अनुभव

› सटीक शब्द = भावों का शिल्प (शब्द शिल्पी)

› दृश्य-बोध = रंग/आकृति, इंद्रिय-बोध = गंध।

› उपमा = चित्र + भाव; हरता = मन में खुशी

› गेहूँ-बाली + हरियाली + अरहर/सनई = मौसम का संकेत

› अरहर-सनई: सोने की ककिणियाँ + गंध + पीली सरसों

› - A + R + E: अर्थ + रंग/आकृति + एहसास